प्रेमचन्द की समकालीनता के कुछ सन्दर्भ

डॉ. रामप्रताप सिंह

समकालीन वही होता है जो समय के सापेक्ष हो। प्रेमचन्द एक ऐसे लेखक हैं, जो परतंत्र भारत में पैदा हुए, इसीलिए परतंत्र भारत परिवेश की उनके साहित्य की विषयवस्तु है। यद्यपि आज भारत में इक्कीसवीं सदी के डेढ़ दशक बीतने के बाद भी प्रेमचन्द किसी न किसी रूप में समकालीन प्रतीत होते हैं। इस लम्बे अन्तराल में परिस्थितियों में अत्याधिक परिवर्तन हुआ है, फिर भी भारतीय समाज के हाशिए पर पड़े लोगों के दुख दर्द को प्रेमचन्द ने जिस तरह उकेरा है, वह अपने आप में भारत को जानने-समझने के लिए एक अमूल्य निधि है।

परतंत्र भारत में प्रेमचन्द के 'गोदान' उपन्यास का नायक होरी की लालसा गाय पालने की थी । इस गाय के कारण ही वह कर्ज लेता है और कर्ज चुकाने में ही वह किसान से मजदूर हो जाता है । स्वतंत्रता के पश्चात् कृषि में यांत्रिकरण का प्रवेश हुआ। इसी कारण बैल आज हमारे लिए अनुपयोगी हो गए। गाय की इच्छा केवल दूध के लिए नहीं थी वरन् बैल कृषि कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था। आज का किसान जब गाय के अर्थशास्त्र को जोड़ता है तो गाय पालना उसे घाटे का सौदा प्रतीत होता है। प्रेमचन्द के समय हरित क्रान्ति नहीं हुई थी किन्तु प्रेमचन्द का होरी इस हरित क्रान्ति के बावजूद भी मुफ़लिसी में जीने को मजबूर है। इसीलिए अखबारों में किसानों के आत्महत्या की सूचनाएं आती रहती हैं। किसान जहाँ परम्परागत रूप में खेती करता था, जिससे अगले वर्ष के लिए बीज संग्रहित कर लेता था। यूरिया का प्रचलन नहीं था। किन्तु आज इस बाजारवादी व्यवस्था ने उन सभी क्षेत्रों पर आधिपत्य जमा लिया है, जिसमें अधिक से अधिक मुनाफा कमाया जा सके। इसीलिए कृषि बीज सौ गुने महंगे दाम पर बेचे जाते हैं। खाद माफिया खाद रोककर अधिक से अधिक पैसा बनाते हैं। इक्कीसवीं सदी में एक ओर हम मंगल ग्रह पर बसने की तैयारी कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर किसानों के लिए पानी, बिजली, खाद उपलब्ध कराने में असमर्थ है, जबकि भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। इसी कारण आज होरी के वंशज अपने गाँव छोड़कर गोबर का सपना लेकर किसी दिल्ली या मुम्बई जैसे महानगरों की ओर पलायन करता है अथवा किसी खाड़ी देश के लिए अपना खून पसीना बहाता है।

प्रेमचन्द का स्वराज्य मात्र राजनीतिक स्वाधीनता नहीं है। वह राजनीतिक स्वाधीनता से महत्वपूर्ण आर्थिक व मानसिक स्वाधीनता को मानते हैं, जिसमें 'दुखी' और 'मोटेराम शास्त्री' जैसे लोग एक साथ बैठ सकें। एक साथ जीवन के सुख-दुख में शरीक हो सकें। आज भारत को स्वतंत्र हुए साठ साल से अधिक हो गया, किन्तु आज का भारत प्रेमचन्द के सपनों के भारत से कोसों दूर है। परतंत्र भारत में जो जमींदार और सामंत थे, जो आम आदमी का शोषण करते थे। स्वतंत्र भारत में सत्ता जिनके हाथों में है, जो नियम कानून बनाते हैं, जो न्याय प्रदान करते हैं, जो जनता को सेवक हैं, किन्तु वास्तव में वे जनता के स्वामी बन बैठे हैं। भारत आज कहने के लिए सबसे बड़ा लोकतांत्रिक राष्ट्र है। स्वतंत्रता प्राप्त किये उनहत्तर बसन्त बीत गए, किन्तु प्रेमचन्द के स्वराज्य से यह स्वराज्य अभी कोसों दूर है। जिसमें 'जॉन' की जगह 'गोविन्द' बैठ गया, किन्तु व्यवस्था तंत्र वैसा ही है जैसा परतंत्र भारत में था। वे अपने प्रसिद्ध निबन्ध 'महाजनी सभ्यता' में लिखते हैं, "जिसमें मनुष्यता, आध्यात्मिकता, उच्चता, सौन्दर्यबोध है, वह कभी ऐसी समाज व्यवस्था की सराहना नहीं कर सकता, जिसकी नींव लोभ, स्वार्थपरता और दूषित मनोवृत्ति पर खड़ी हो। ईश्वर ने तुम्हें विद्या और कला की सम्पत्ति दी है, तो उसका सर्वश्रेष्ठ उपयोग यही है कि उसे जन सामान्य की सेवा में लगाओ, यह नहीं कि

उससे जन मानस पर हुकूमत चलाओ, उसका खून चूसो और उसे उल्लू बनाओ।"[1]

स्वतंत्र भारत में मूल्यों का कितना अवमूल्यन हो गया है। प्रेमचन्द परतंत्र भारत में ही महसूस कर लिए थे। इसीलिए 'आहुति' कहानी दो मूल्यों, आदर्शों का द्वन्द्व है। एक है विश्वम्भर जैसा चरित्र जो अपनी आत्मा की आवाज सुनता है, समझौता करने से इन्कार करता है। पढ़ाई, नौकरी और पैसे की राह छोड़कर देश के स्वराज्य के काम को अपनी इज्जत का सवाल समझकर उसमें कूदता है, मर जाने को तैयार है। दूसरी ओर आनन्द है, जिसके लिए कैरियर और मौजमस्ती ही प्रमुख है। जिसके भीतर न गुलामी के विरुद्ध कोई बेचैनी है, बल्कि विश्वम्भर की स्वराज्य की दीवानगी का मखौल उड़ाता है। रूपमणि का अकलुष संवेदनशील मन विश्वम्भर के मनुष्य के मनुष्योचित सौन्दर्य को पहचानता है और उसकी ओर खिंचता है। इसी कारण आनन्द द्वारा विश्वम्भर का मजाक उड़ाने पर दो टूक कहती हैं, "तुम कह सकते हो कि हमारे लिए पेट की चिंता ही बहुत है, हमसे और कुछ नहीं हो सकता, हममें उतना न साहस है, न बल, न धैर्य, न संगठन बनाने की क्षमता, ये बात तो मैं मान जाऊँगी, किन्तु राष्ट्र हित के लिए प्राण न्यौछावर करने वाले मूर्ख हैं यह नहीं कहा जा सकता।"[2]

प्रेमचन्द जाति धर्म या समाज धर्म के बरक्स मनुष्य धर्म की चर्चा की है। भारत स्वतंत्र हुआ उस समय विभाजन की पीड़ा भी झेलनी पड़ी। केवल इतना ही नहीं दो धर्म के लोग एक दूसरे के रक्त के प्यासे हो गए। धर्म के नाम पर इतना नरसंहार हुआ कि धर्म की जब-जब चर्चा होगी इतिहास शर्मसार हो जायेगा। यद्यपि धर्म के नाम पर भारत विभाजन की त्रासदी आम नागरिकों को झेलनी पड़ी, किन्तु विज्ञान एवं तकनीक के युग में भी भारत साम्प्रदायिकता से जूझ रहा है।

प्रेमचन्द ने अपने कहानियों और उपन्यासों में मुस्लिम चरित्रों को भी गढ़ा। "गोबर ने सबको राम-राम किया। हिन्दू भी थे, मुसलमान भी थे, सभी में मित्रता भाव था। सब एक दूसरे के दुख दर्द के साथी, रोजा रखने वाले रोजा रखते थे, एकादशी रखने वाले एकादशी। कभी-कभी विनोद भाव में एक दूसरे पर छींटे भी उड़ा लेते थे। गोबर अलादीन की नमाज को उठा बैठकी कहता, अलादीन पीपल के नीचे स्थापित सैकड़ों छोटे-बड़े शिवलिंग को बटखरे बताता।"[3] लेकिन साम्प्रदायिक द्वेष का नाम भी न था।

कदाचित आज जिस तरह सत्ता प्राप्त करने के लिए धर्म और जाति का सहारा लिया जा रहा है। मन्दिर और मस्जिद के नाम पर बहुत सारे नगर जलकर खाक हो जा रहे हैं। प्रेमचन्द इन पात्रों के माध्यम से साम्प्रदायिक सद्भाव का संदेश देते हैं। केवल इतना नहीं नहीं वह धर्म के पाखण्ड को भी अपनी कहानियों में उघारते हैं।

प्रेमचन्द जिस पाखण्ड, अन्धविश्वास के खिलाफ जीवन भर आम आदमी को सावधान करते रहे। स्वतंत्र भारत में जनतंत्र का चतुर्थ स्तम्भ कही जाने वाली मीडिया बाजारवादी शक्तियों के हाथों बिक चुकी है। जहाँ मुनाफा ही सबसे बड़ा मूल्य है। इसीलिए बहुत सारे नकली बाबा प्रवचन करके व अध्यात्म का झूठा संस्करण फलित ज्योतिष के बल पर जनता को ठगने का कार्य कर रहे हैं। यही नहीं ये बाबा सत्ता सुख प्राप्त करने के लिए देश को गिरवी रखने में भी संकोच नहीं कर सकते। जिस देश के नागरिकों को बुनियादी सुविधाएं, शिक्षा, स्वास्थ्य, पानी, बिजली, सड़क मुनासिब न हो, वहाँ हिन्दू-मुस्लिम के नाम पर बरगला कर हम इन ज्वलंत सवालों से बचना चाहते हैं। सद्गति कहानी के माध्यम से प्रेमचन्द इस पाखण्ड की क्रूरता का सटीक चित्रण करते हैं। इक्कीसवीं सदी में बाजारवाद व भूमण्डलीकरण के परिपे्रक्ष्य में आज ऐसे लेखक की जरूरत शिद्दत से महसूस की जा रही है, जो धर्म व अध्यात्म के सकारात्मक पक्ष से जनता को परिचित कराये।

भारतीय संविधान एक समतामूलक समाज की उद्घोषणा करता है, किन्तु यह चिन्ता का विषय और दुर्भाग्यपूर्ण है। हम स्वतंत्र भारत में छुआछूत को समाप्त नहीं कर सके। प्राथमिक विद्यालयों में रसोइया के पदों पर जो अनुसूचित जाति के लोगों की नियुक्तियाँ हुई हैं, भारत की वर्णवादी व्यवस्था को यह स्वीकार नहीं। इसी कारण अखबारों में यह पढ़ने को मिलता है कि एक ऐसी जाति में पैदा हुई महिला के हाथ से बना भोजन बच्चों ने खाने से मना कर दिया। ये अस्वीकृति बच्चों द्वारा नहीं

वरन् उस वर्णवादी व्यवस्था की सोच का परिणाम है, जिसमें जाति ही कुलीनता और योग्यता का मानदण्ड है। प्रेमचन्द 'सद्गति', 'ठाकुर का कुआं' जैसी कहानियों में भारतीय समाज की जो तस्वीर प्रस्तुत करते हैं, क्या स्वतंत्र भारत उन बुराइयों को समाप्त कर सका। यह बहुत बड़ा सवाल है। इस सवाल से भारत जब तक जूझता रहेगा तब तक प्रेमचन्द की समकालीनता बरकरार रहेगी।

प्रेमचन्द एक ऐसे रचनाकार हैं, जो परतंत्र भारत के शोषण की तस्वीर प्रस्तुत करते हैं, जमींदार, सामंत परतंत्र भारत में शोषण करते थे। स्वतंत्र भारत में विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका जो सरकार का अंग है, ऊँचे-ऊँचे पदों पर बैठे लोग जनता का किस तरह शोषण कर रहे हैं। भ्रष्टाचार में आकण्ठ डूबे हैं। इसी कारण भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गाँधी की स्वीकारोक्ति है कि हम 1 रु. देते हैं तो मात्र 10 पैसे ही जनता के पास पहुँचता है। भारतीय संसद में नोटों की गड्डियाँ उछलती हैं। जनतंत्र में धनतंत्र का बोलबाला है। जो जनता के सेवक हैं वे जनता के मालिक बन गये हैं। भारतीय संविधान समानता व स्वतंत्रता की गारण्टी देता है, समाज की बात करता है, किन्तु आज भी इक्कीसवीं सदी में आए दिन दलित का अपमान होता रहता है। मुनिया जैसी लड़कियों को पंचायतें कत्ल का फरमान जारी करती हैं।

इस प्रकार प्रेमचन्द का साहित्य आज भी हमें वर्तमान चुनौतियों के प्रति सावधान करना है। भारतीय समाज के जिस चित्र को अपनी लेखनी से प्रेमचन्द ने उकेरा। इक्कीसवीं सदी में वे समस्याएं दूसरे रूप में हमारे सामने उपस्थित हैं। सत्ता का चरित्र आज भी वैसा ही है। 'नमक के दरोगा' जैसे पात्र वास्तविक जिन्दगी में मिल जायेंगे। भारत औपनिवेशिक दासता से मुक्त हो गया किन्तु वास्तविक रूप में जनतंत्र अभी कोसों दूर है। जब तक पाखण्ड व छुआछूत, साम्प्रदायिकता, स्त्री मुक्ति, शोषणविहीन समाज मात्र एक 'यूटोपिया' रहेगा तब तक प्रेमचन्द प्रासंगिक रहेंगे।

सन्दर्भ सूची

1. महाजनी सभ्यता- प्रेमचन्द।
2. आहुति- प्रेमचन्द।
3. गोदान- प्रेमचन्द।

संपर्क : असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डी॰वी॰पी॰जी॰ कालेज, उरई